उपचारात्मक पोषण
(THERAPEUTIC NUTRITION)

रोगावस्था में, जब व्यक्ति विभिन्न रोगों से ग्रस्त रहता है, जैसे – बुखार, अतिसार, अपच, कुब्ज, वृक्क का रोग आदि, तो ~~आ~~ रोग से शीघ्र विमुक्ति पाने के लिए दवा के साथ-साथ आहार का भी उपयोग किया जाता है। "आहार द्वारा चिकित्सा" कहते हैं।

उपचारात्मक पोषण के उद्देश्य

i) पोषण स्तर को उत्तम बनाए रखना

ii) रोगी की शारीरिक दशा, रोग की स्थिति, आर्थिक दशा तथा रोग के लक्षण को ध्यान में रखते हुए आहार नियोजन करना।

iii) रोग की अवस्था के दौरान परिवर्तित चयापचय की क्षमता के अनुसार भोज्य तत्वों को ग्रहण की जाने वाली मात्रा को समायोजित करना।

iv) शरीर को पर्याप्त विश्राम देना

v) शारीरिक वजन के अनुसार आहार नियोजन करना

Scanned with CamScanner

Date: / /
Page No.:

✱ उपचारात्मक आहार के सिद्धान्त

i) उपचारात्मक आहार सामान्य आहार से कम-से-कम भिन्न हो।

ii) उपचारात्मक आहार रोगी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, रुचि, खाने की आदतें, धार्मिक मान्यताएँ, भोजन सम्बन्धी पसन्द एवं सभी आवश्यक बातों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए ताकि रोगी परिवर्तित आहार को मन से खा सके।

iii) परिवर्तित आहार शरीर के पोषण मांग के अनुरूप हो

iv) रोगी को पोषण आहार के सम्बन्ध में जानकारी देना।

Scanned with CamScanner

आहार में परिवर्तन लाने हेतु विभिन्न तरीके

i) बिना मसाले रहित आहार

ii) उच्च कैलोरी तथा निम्न कैलोरीयुक्त आहार

iii) उच्च प्रोटीन तथा निम्न प्रोटीनयुक्त आहार

iv) उच्च वसा तथा निम्न वसायुक्त आहार

v) उच्च रेशों वाला तथा कम रेशों वाला आहार

vi) पोटैशियम रहित आहार

vii) गैलेक्टोज रहित भोजन

नलिका द्वारा दिये जाने वाले आहार

i) उच्च कार्बोजयुक्त आहार

ii) उच्च कार्बोजयुक्त तथा सामान्य प्रोटीनयुक्त आहार

iii) उच्च प्रोटीन तथा उच्च कैलोरीयुक्त आहार।

Scanned with CamScanner